श्रम ही अराधना

स्वर्ण जयन्ती वर्ष 2005

भारतीय मजदूर संघ

स्थापना के 50 वर्ष में

14वां

अखिल भारतीय अधिवेशन

दिनांक 3-4-5 अप्रैल 2005

दत्तोपंत ठेंगड़ी नगर

रामलीला मैदान, दिल्ली

कदम दर कदम

भारतीय मजदूर संघ स्वर्ण जयन्ती वर्ष

भारत वर्ष में अतीत काल से कामगारों की पहचान, विश्वकर्मा के रूप में चलती आई है जिन्हें कुम्भकार, बढ़ई, लौहार, चर्मकार इत्यादि नामों से भी जाना जाता रहा है । शुक्रनीति में विस्तार से इसका वर्णन मिलता है ।

विदेशी दासता के समय सन् 1920 में निःसंदेह, श्रमिकों के संबंध में चिंता करने वाले बहुत से राष्ट्र-भक्त थे, परंतु जब अंतर्राष्ट्रीय श्रम संगठन (ILO) में भारत के श्रमिक प्रतिनिधि भेजने की बात आई तो आनन-फानन में ऐटक नाम का श्रम संघ खड़ा कर उनके द्वारा एक प्रतिनिधि ILO में भेज दिया गया । इसी काल चक्र में विदेशों में वामपंथ का प्रभाव बढ़ने के कारण उन्हीं के प्रभाव व निर्देशानुसार भारत के वामपंथियों ने भी अपना कार्य आरंभ किया । स्वतंत्रता आंदोलन में भाग लेने वाले, जो ऐटक को भी चलाने वाले रहे थे, अंग्रेजों द्वारा जेल में भेजने के कारण वामपंथियों ने ऐटक पर कब्जा कर लिया। बाद में जेल से छूटने के पश्चात् राजनैतिक दल का अपना मजदूर फ्रंट भी होना चाहिए इसकी आवश्यकता है, यह विचार कर धीरे-२ आजादी के पश्चात् सभी राजनैतिक दलों ने अपने-अपने मजदूर संगठन बनाने आरंभ किये ।

यही नहीं तो भारत में जब अंग्रेजों द्वारा उद्योग स्थापित करने आरंभ हो गये तो उनमें श्रमिकों की भागीदारी बढ़ी । मजदूरी सस्ती होने के कारण अंग्रेजों का माल, भारत के माल के सामने टिक नहीं पा रहा था तो मजदूरों के हितों की सुरक्षा का ध्यान न कर भारत का माल मंहगा हो, मजदूरों के कानून बनाये जाने लगे । इस प्रकार चाहे मजदूर संघों की स्थापना थी या मजदूरों के संबंध में कानून बनाने का मामला, मजदूर हित को केन्द्र में रखकर यह निर्णय नहीं लिये गये ।

पहली बार राष्ट्रवादी शक्तियों ने विचार किया कि एक ऐसा मजदूर संगठन, जो केवल, मजदूरों का, मजदूरों के लिये तथा मजदूरों के द्वारा चलाया जाना चाहिए, स्थापित हो । इस संगठन व मजदूरों के लिए देशहित, उद्योगहित, मजदूर हित, लक्ष्य भी तय किये गये । अर्थात् देश जीवित रहेगा तो उद्योग भी जीवित रहेगा, उद्योग जीवित रहेगा तो मजदूर भी जीवित रहेगा अपितु मजदूर खुशहाल हुआ तो उद्योग को मरने नहीं देगा, उद्योग नहीं मरेगा तो देश को गिरने नहीं देगा । (इस भाव को राष्ट्रभक्त मजदूरों के लिए स्थापित करने की सोच उत्पन्न हुई ।) यह भी विचार हुआ कि मजदूर संघों को पूर्ण रूप से राजनैतिक प्रभाव से मुक्त रहना चाहिए (अर्थात् मजदूर संघों में कोई भी राजनैतिक पदेन नेता दायित्व न ले । इसी प्रकार कोई भी मजदूर संघों का दायित्व युक्त कार्यकर्ता राजनैतिक दलों में दायित्व न संभाले ।) किसी भी मजदूर संगठन में भिन्न-भिन्न विचार एवं राजनैतिक सोच वाले मजदूर हो सकते हैं, इससे संगठन पर कोई प्रभाव नहीं पड़ेगा । यह भी माना गया कि मजदूर संघों में व्यक्तिवाद, व्यक्ति की जय-जयकार व्यक्ति का जन्म दिन व्यक्ति के नाम से चंदा इत्यादि नहीं बल्कि एक टीम के रूप में कार्य हो के भाव को प्रमुखता दी जाये ।

ऐसे ही भावों एवं विचारों को लेकर लोकमान्य तिलक जयंती के दिन 23 जुलाई 1955 को भारतवर्ष में पहली बार बिना राजनैतिक हस्तक्षेप एवं

राष्ट्र का औद्योगिकरण
उद्योगों का श्रमिकिकरण
श्रमिकों का राष्ट्रीयकरण

सहयोग के भारतीय मजदूर संघ की स्थापना भोपाल में हुई । स्थापना के समय भारतीय मजदूर संघ के पास न तो कोई सदस्य था, न कोई यूनियन थी, न फाइल थी, न कोई कार्यालय था, न कोई झंडा था न ही कोई बैनर था। अन्य संगठनों की स्थापना के ठीक विपरीत भारतीय मजदूर संघ ने अपना कार्य शून्य से आरंभ किया । देश में जब थोड़ा बहुत कार्य आरंभ हो गया, तभी दिल्ली में 1967 में 12 वर्षों के पश्चात पहला अधिवेशन संपन्न हुआ । इस समय तक 541 यूनियन व 2,46,902 सदस्यता भारतीय मजदूर संघ से संबंधित हो चुकी थी ।

इसके पश्चात् तो भामसं. ने पीछे मुड़ कर नहीं देखा । ऐसा भी नहीं था कि भामसं. के रास्ते में बस फूल ही फूल थे । मजदूर क्षेत्र में सभी अन्य श्रम संघों में भामसं. अछूत था । अपने शैशव काल से, ही सभी श्रमसंघ जो आपस में एक दूसरे के प्रतिद्वन्द्वी थे, भामसं. के मामले में इसके विस्तार को रोकने के लिए एक थे । संघर्ष हुए प्रबंधकों के साथ, आपसी प्रतिस्पर्धा के साथ, कार्यकर्ताओं के अपने परिवारों के साथ और स्वयं अपने साथ । लेकिन एक बार जो चलना आरंभ हुआ तो सभी को पीछे छोड़ते हुए बढ़ते ही गए ।

भारतीय मजदूर संघ की प्रगति

अधिवेशन	वर्ष	स्थान	सदस्य संख्या
प्रथम	1967	दिल्ली	246902
द्वितीय	1970	कानपुर	456100
ततीय	1972	मुम्बई	567465
चतुर्थ	1975	अमतसर	839432
पंचम	1978	जयपुर	1083488
षष्ठम्	1981	कोलकाता	1805910
सप्तम्	1984	हैदराबाद	2053721
अष्टम्	1987	बंगलौर	3286559
नवम्	1991	बड़ौदरा	3889376
दशम्	1994	धनबाद	4542600
एकादशम्	1996	भोपाल	4718831
द्वादशम्	1999	नागपुर	6431691
त्रयोदशम्	2002	तिरूअनन्तपुरम	8318348
चतुर्दशम्	2005	दिल्ली	8440281

कदम दर कदम राष्ट्र, उद्योग व मजदूरों के लिये :-

1. 1959 : कर्मचारियों को बोनस मिलना चाहिये प्रस्ताव पास किया ।
2. 1962 : चीनी आक्रमण के समय भारतीय मजदूर संघ ने अपनी क्षमता व योग्यता के अनुसार अपना योगदान किया ।
3. 1963 : मुम्बई बंद के आह्वान को सफल किया सरकार ने लकड़ावाला

देश के हित में करेंगे काम

काम के लेंगे पूरे दाम

समिति का गठन कर समस्या का समाधान किया ।

4. 1965 : पाकिस्तानी आक्रमण के समय भारतीय मजदूर संघ ने जोर-शोर से अपनी क्षमता व योग्यता के अनुसार अपना योगदान दिया ।

5. 1966 : भारतीय श्रम नीति के संदर्भ में न्यायाधीश गजेन्द्रगडकर की अध्यक्षता में प्रथम श्रम आयोग को ज्ञापन सौंपा।

6. 1968:क) कार्यकर्ताओं के प्रशिक्षण का प्रथम अभ्यास वर्ग भूसावल महाराष्ट्र में संपन्न हुआ ।
ख) सरकारी कर्मचारियों की हड़ताल एवं श्री ठेंगड़ी जी जेल गये।

7. 1969 : क) माननीय राष्ट्रपति जी को राष्ट्रीय मांग पत्र सौंपा । (भारतीय मजदूर संघ के सिद्धांत के आधार पर जहां अधिकारों की मांग की है वहां कर्तव्य और अनुशासन के निर्वाह की बात की है)
ख) बैंकों के राष्ट्रीयकरण के विरोध में सरकार को ज्ञापन दिया।

8. 1974 : रेल हड़ताल ऐतिहासिक रही तथा भामसं. द्वारा महत्वपूर्ण भूमिका निभाई गई ।

9. 1975-76 : 25 जून आपातकाल में सरकार के दमन चक्र एवं मजदूर विरोधी नीतियों के विरुद्ध आंदोलन किया जिसमें हजारों मजदूर कार्यकर्ता जेल गये तथा लगभग 1500 मजदूर मीसा में बंद हुए ।

10. 1977 : क) जनता पार्टी की सरकार के समय में 'भूत लिंगम' कमेटी के विरुद्ध आंदोलन कर अपनी नीति स्पष्ट की ।
ख) आई.एल.ओ. जेनेवा में प्रथम बार भारतीय मजदूर संघ के प्रतिनिधि के रूप में माननीय ठेंगड़ी जी ने भाग लिया ।

11. 1979 : भारतीय मजदूर संघ ने सरकार द्वारा राष्ट्र व मजदूरों के हितों के विरुद्ध जो नीतियाँ बनायी उनका जमकर विरोध किया ।

12. 1980 : भारतीय मजदूर संघ के रजत जयन्ती वर्ष में देश भर में स्थान-स्थान पर विश्वकर्मा जयन्ती का आयोजन किया, जिसमें लाखों मजदूरों ने भाग लिया ।

13. 1981 : केन्द्र सरकार की गलत श्रम नीतियों के विरुद्ध भारतीय मजदूर संघ सहित 8 केन्द्रीय श्रमिक संगठन व औद्योगिक महासंघों द्वारा राष्ट्रीय अभियान समिति का गठन किया गया ।

14. 1982 : आर्थिक आजादी की लड़ाई की तैयारी आरम्भ की गई ।

15. 1984 : चायना ट्रेड यूनियन फेडरेशन चीन के निमंत्रण पर भारतीय मजदूर संघ का ठेंगड़ी जी के नेतत्व में पांच व्यक्तियों का प्रतिनिधि मंडल चीन गया, जहां पर मा. ठेंगड़ी जी का भाषण चाइना रेडियों पर भी प्रसारित किया गया ।

16. 1986 : राष्ट्रीय एकता निशस्त्रीकरण एवं रंग भेद नीति जैसे मुद्दों पर 10 केन्द्रीय श्रम संगठनों का संयुक्त गठन, विश्व शांति के लिए भारतीय मजदूर संघ की प्रमुख भूमिका रही ।

17. 1990 : मास्को में WFTU के विश्व सम्मेलन में भारतीय मजदूर संघ का प्रतिनिधि मंडल गया । इसी सम्मेलन में सर्वसम्मति से ट्रेड

बीएमएस की क्या पहचान

त्याग, तपस्या और बलिदान

यूनियन गैर राजनैतिक रहने का प्रस्ताव पास किया गया । अप्रत्यक्ष रूप से भामसं. की भूमिका का समर्थन किया गया ।

18. 1991 : सरकार की आर्थिक नीतियों के विरूद्ध प्रदर्शन एवं स्वदेशी जागरण मंच की स्थापना की गई ।

19. 1993 : डंकल प्रस्ताव के विरोध में विशाल प्रदर्शन एवं राष्ट्रपति जी को ज्ञापन दिया गया ।

20. 1994 : क) धनबाद में पश्चिमी साम्राज्यवाद के विरूद्ध आर्थिक स्वतंत्रता का युद्ध शुरु करने की घोषणा की गई ।
ख) सर्वपंथ समादर मंच की स्थापना भी हुई ।

21. 1998 : निजिकरण के विरोध में संसद भवन पर विशाल प्रदर्शन हुआ ।

22. 1999 : दूसरे श्रम आयोग गठन के लिए विशेष आग्रह की भूमिका रही ।

23. 2000 : प्रदेश की राजधानियों में बोनस सिलिंग एवं मजदूर विरोधी नीतियों के विरूद्ध प्रदर्शन किया तथा दिल्ली में तत्कालिक प्रधानमंत्री जी को ज्ञापन सौंपा ।

24. 2001 : WTO (मोड़ो-तोड़ो-छोड़ो नारे के साथ) के विरोध में अखिल भारतीय स्तर की दिल्ली में विशाल रैली का आयोजन किया गया जिसमें देश भर के लाखों मजदूर साथ आये ।

25. 2003 : किसान संघ, स्वदेशी जागरण मंच और भारतीय मजदूर संघ ने संयुक्त रूप से दिल्ली में विशाल धरना एवं प्रदर्शन किये ।

26. 2004 : यू.पी.ए. सरकर की मजदूर विरोधी नीतियों एवं बदले की भावना के विरूद्ध 20 सितंबर को दिल्ली में प्रदर्शन किया गया ।

महोदय,

सन् 2005 में भारतीय मजदूर संघ अपनी स्थापना के पचास वर्ष पूर्ण कर रहा है । इस वर्ष (2005) को भामसं. स्वर्ण जयन्ती वर्ष के रूप में भी मना रहा है । वर्ष 2005 में ही भामसं. का चौदहवां अधिवेशन भी होना तय हुआ है । स्वाभाविक है कि स्वर्ण जयन्ती वर्ष में संपन्न होने वाले अधिवेशन के आयोजन एवं भविष्य की मजदूर क्षेत्र की नीतियों के निर्धारण इत्यादि जैसे विषयों के कारण प्रभावी एवं भव्य भी होगा और महान भी होगा । इस अधिवेशन में संपूर्ण देश से लगभग 6000 प्रतिनिधि भाग लेने वाले हैं । इतने बड़े आयोजन को करने के लिए लगभग 1500 कार्यकर्ता प्रबंध व्यवस्था में भी लगेंगे । भामसं. की परिकल्पना है कि यह आयोजन अपने आप में अनूठा तथा चिरस्मरणीय तो हो ही साथ ही श्रम संगठन के क्षेत्र में एक मील का पत्थर भी साबित हो ।

भामसं. (दिल्ली प्रदेश) द्वारा आपको यह सूचित करते हुए अत्यंत हर्ष हो रहा है कि इस भव्य आयोजन को आयोजित करने का सौभाग्य दिल्ली प्रदेश के कार्यकर्ताओं को प्राप्त हुआ है इस आयोजन को सफलतापूर्वक संपन्न करने के लिए सभी कार्यकर्ता कत संकल्प भी है। इस महायज्ञ में प्रत्येक कार्यकर्ता अपनी आहुति डालने हेतु आतुर है । आप भी इस महायज्ञ में अपनी क्षमता एवं श्रद्धा के साथ सहयोग करेंगे, भामसं. (दिल्ली प्रदेश) आपसे ऐसी आशा करता है ।

राष्ट्रभक्त मज़दूरों
एक हो - एक हो

श्रद्धेय दत्तोपंत जी ठेंगड़ी

भारतीय मजदूर संघ
संस्थापक

संक्षिप्त परिचय

भारतीय मजदूर संघ के संस्थापक श्रीमान दत्तोपंत ठेंगड़ी जी विधि स्नातक थे । उनका जन्म 10 नवंबर 1920 को आर्वी, जिला वर्धा, महाराष्ट्र में तथा स्वर्गवास 14 अक्टूबर 2004 पुणे में हुआ ।

1942 से 1949 तक रा. स्व. संघ के केरल, बंगाल एवं असम प्रांत में प्रचारक रहे । 1949 से 1951 तक इंटक में विभिन्न पदों पर कार्य किया । वामपंथी विचारधारा का गहन अध्ययन किया तथा भारतीय मूल्यों एवं संस्कति को केन्द्र में रखकर चिंतन किया ।

आप बहुभाषी थे तथा हिन्दी, संस्कत, बंगला, मलयालम, अंग्रेजी एवं मराठी भाषाओं पर पूर्ण अधिकार रखते थे । लगभग 15 वर्ष की आयु में ही अपने गह नगर में कई संगठनों के पदाधिकारी बने । कई सामाजिक विविध संगठनों जैसे कि भारतीय मजदूर संघ, भारतीय किसान संघ एवं स्वदेशी जागरण मंच की स्थापना की तथा कई राजनैतिक, सामाजिक एवं श्रम संगठनों के संस्थापक सदस्य, संरक्षक एवं एसोसियेट सदस्य के रूप में जुड़े रहे तथा राज्यसभा में सदस्य रहते हुए मजदूरों के पक्ष को सरकार के समक्ष प्रभावी रूप में प्रस्तुत करते रहे ।

हिन्दी, अंग्रेजी एवं मराठी भाषा में लगभग 100 पुस्तकें लिखीं । अनेकों पुस्तकों की प्रस्तावना तथा कई विश्वविद्यालयों में अन्य सामाजिक विषयों पर पेपर भी प्रस्तुत किये एवं भाषण भी दिये । श्रमिक क्षेत्र, राम शिला पूजन, राम कार सेवा सत्याग्रह, दीनदयाल मेमोरियल चिकित्सालय पुणे एवं महामना मालवीय जयंती में विशेष योगदान रहा । श्री ठेंगड़ी जी द्वारा अफ्रीका, युरोप, उत्तरी अमेरिका एवं एशिया महाद्वीप के लगभग 100 देशों की यात्रा की गई ।

बीजिंग रेडियो पर दिनांक 28-4-1985 को आपका भाषण भी चीन सरकार द्वारा प्रसारित किया गया तथा आप हेडगेवार प्रज्ञा पुरुस्कार से भी सम्मानित किये गये ।

-: निवेदक :-

भारतीय मजदूर संघ (दिल्ली प्रदेश)

5239, अजमेरी गेट, दिल्ली - 110006

फोन : 23211313 मो. : 9868112780 फैक्स : 23217732

LABOURISE THE INDUSTRY • INDUSTRIALISE THE NATION • NATIONALISE THE LABOUR